Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था

मुक्ता साहू तेली*

* एम.ए. (इतिहास) यूजीसी नेट, जी- 465,66 आजाद नगर, भीलवाड़ा (राज.) भारत

प्रस्तावना – यह तो ऐतिहासिक सत्य है कि भारत आदिकाल से ही विश्व को अपने ज्ञान से आलोकित करता रहा है। प्राचीन इतिहास के अध्ययन से प्रतीत होता है कि पूर्व काल में भारत राष्ट्र सभी प्रकार से उन्नत – अभ्युदय शिखर पर था। ज्ञान– विज्ञान, बल– बुद्धि, सुख– संपदा ,व्यापार ,रण कौशल, उद्योग और कला आदि क्षेत्र में भारतवर्ष ने विकास करके सामर्थ्य को प्राप्त किया था। इस सामर्थ्य का कारण यह था कि यहां के लोग ज्ञान परायण थे और शिक्षा केवल पेट पूर्ति के लिए नहीं अपितु मानव को मानवता सीखने का एक साधन भी थी।

वैदिक काल से प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था की शुरुआत मानी जाती है, लेकिन कालीबंगा से अंडाकार कब्र मिली है, जिसमें एक खोपड़ी में छः छेद किए हुए है, इस आधार पर कहा जाता है कि यह शल्य चिकित्सा का प्रमाण है। जो की प्राचीनतम शल्य चिकित्सा शिक्षा का प्रमाण भी माना जाता है।

ऋग्वेद में कई ऋचाओं का लेखन विदुषियों अथवा ब्रह्म वादिनी, ऋषिका द्वारा किया गया था। जिसमें पौलूमी, सिकता, अपाला, घोषस, विश्वारा, लोपामुद्रा, काक्षावृत्ति, आत्रेय, अर्चनाना इत्यादि के नाम हमें ऋग्वेद में मिलते हैं, जो की वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति पर उनके अध्ययन–अध्यापन पर प्रकाश डालने का एक साहित्यिक स्रोत है बृहदारण्यक उपनिषद के तृतीय व अष्टम ब्राह्मण से हमें गार्गी – याज्ञवल्क्य का प्रसिद्ध दार्शनिक संवाद प्राप्त होता है। यह ऐतिहासिक शास्त्रार्थ मिथिला के राजा जनक द्वारा आयोजित महान यज्ञ की सभा में हुआ था। इससे प्रमाणित होता है कि महिलाएं न सिर्फ वेदाध्ययन करती थी बल्कि सार्वजनिक रूप से वाद–विवाद व शैक्षिक संवादों जैसी प्रतियोगिताओं में भाग भी लेती थी।

मानव के कर्तव्यों का समयबद्ध तरीके से निष्पादन हेतु आश्रम व्यवस्था की कल्पना की गई। जिसमें प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम में उपनयन, वेदारंभ, केशांत व समावर्तन संस्कार गुरुकुल में शिक्षा से संबंधित थे। शुल्व सूत्र, इसके सूत्रकार गौतम ऋषि कहलाते हैं, में वेदिका को स्थापित करने हेतु विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय (रेखा गणित) मापन उल्लेखित है। इस कारण इसे ज्यामिति का प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है।

उपनिषदों में ब्रह्म ज्ञान के शिक्षक ऋषियों की आवास – भूमि अरण्य को ही बताया गया है। इन्हीं ब्रह्मज्ञानियों के समीप ब्रह्मज्ञान के विद्यार्थी पहुंचते थे। लगभग पांचवी शती ईसा पूर्व के लगभग से आचार्यो के विद्यालय में से अनेक आश्रम के स्थान पर मंदिर बन गए। उनको यदि विद्या मंदिर कहा जाए तो अतियुक्ति ना होगी।

ह्वेनसांग ने अपनी भारत – यात्रा के वर्णन में तत्कालीन भारत के प्रमुख महाविद्यालयों का वर्णन किया है। कामरूप (असम) की शिक्षण–संस्थानों की चर्चा करते हुए उसने लिखा है–'कामरूप वैदिक शिक्षा का केंद्र है। राजा भास्कर वर्मा ने स्वयं कामरूप में विद्यालय की प्रतिष्ठा की है। इस विद्यालय की ख्याति इतनी बढ़ गई है कि दूर–दूर से विद्यार्थी शिक्षा पाने के लिए वहां आते हैं। काशी, कलिंग, उज्जैनी, चित्तौड़ आदि प्रदेशों के विद्यार्थी यहां अध्ययन करते हैं।राजा और प्रजा दोनों विद्या व्यसनी थे। ह्वेनसांग ने जिस प्रकार विहारों के साथ भिक्षुओं की संख्या बतलाई है, उसी प्रकार देव मंदिरों के साथ तीर्थिकों की संख्या का परिगणन किया है।'

समय के साथ–साथ शिक्षा का विस्तार हुआ और भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की विजय पताका जावा, सुमात्रा, स्याम, चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत तथा मध्य एशिया के देशों में सहस्त्र वर्षो तक लहराती रही। भारत वर्ष में प्राचीन समय में शिक्षा पद्धति का विकास वैज्ञानिक रूप से हुआ था। शिक्षा के विभिन्न विषय प्राचीन शिक्षाविदों ने निर्धारित किए थे। उन विषयों को विभिन्न विभागों में विभक्त भी किया था। वर्तमान शिक्षा–पद्धति के तुल्य ही प्राचीन समय की शिक्षा– संस्थानों में भी शिक्षा के विषयों को निर्धारित करके उनके विभाग निश्चित किए गए थे। 'महाभारत' में अनेक इस प्रकार के आश्रमों का वर्णन है, जहां शिक्षा के विविध विषयों के अध्यापन का प्रबंध था। यहां योग्य आचार्य छात्रों को विद्याध्ययन कराते थे। यहां का सर्वोच्च अधिकारी आचार्यध कुलपति कहलाता था।

तक्षशिला व नालंदा के विश्वविद्यालय समस्त विश्व में अपनी कीर्ति बिखरे हुए थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय ने जहां भारत को प्रसेनजीत व चंद्रगुप्त मौर्य जैसे सम्राट, वही चाणक्य जैसे कूटनीतिक तथा पाणिनि जिन्होंने अष्टाध्याई जैसे संस्कृत व्याकरण ग्रंथ के रचयिता दिए। इसी के साथ बिंबिसार के राजवैद्य जीवक व आयुर्वेद चिकित्सक चरक भी तक्षशिला विश्वविद्यालय में अध्ययन करते थे। नालंदा विश्वविद्यालय में तर्कशास्त्र , चिकित्सा विज्ञान और खगोल गणित की विषय वस्तु थी। इसी के साथ यहां वेदों , दर्शन , व्याकरण व साहित्य सहित कुल 64 विभिन्न विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती थी।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में वैयक्तिक उत्कर्ष सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं के आधारभूमि पर ही पल्लवित होता रहा। वास्तव में

प्राचीन भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का मूल कारण यहां की सामाजिक सुव्यवस्था थी जो कि देश की विशिष्ट शिक्षा– पद्धति के द्वारा निरंतर परिपुष्ट होती रहती थी।

प्राचीन भारतीयों ने शिक्षा को अत्यधिक महत्व प्रदान किया। भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान तथा विभिन्न उत्तारदायित्वों के विधिवत् निर्वाह के लिये शिक्षा की महती आवश्यकता को सदा स्वीकार किया गया। वैदिक युग से ही इसे प्रकाश का स्रोत माना गया जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को आलोकित करते हुए उसे सही दिशा निर्देश देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कृष्ण कुमार : प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति, सरस्वती सदन, सफदरगंज एन्क्लेव, नई दिल्ली (1999)
2. कृष्णमूर्ति, जे. शिक्षा केन्द्रों के नाम पात्र, रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली
3. हरिशचन्द्र व्यास: हम और हमारी शिक्षा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर (2001
4. भास्कर मिश्र, वैदिक शिक्षा पद्धति, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद–विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (2003)

****